संपादकीय

दूरदर्शन : यंत्र भी और चैनल भी

21 नवंबर को 'विश्व टेलीविजन दिवस' है। टेलीविजन में 'टेली' के लिए हिंदी में सामान्य पर्याय 'दूर' और 'विजन' 'दृष्टि' से अधिक 'दर्शन' के समीप है। इस प्रकार दूरदर्शन हिंदी पर्याय तो है टेलीविजन का, पर यह भारतीय सरकारी चैनल का भी द्योतक है। दोनों एक हैं और अलग भी। आजकल दूरदर्शन देखने का एक मतलब सरकारी चैनल 'दूरदर्शन' देखना भी निकलता है न कि निजी चैनलों को देखना! बहरहाल, टेलीविजन के प्रयोग की शुरुआत 1920 के दशक के अंत में हो गई थी, किंतु 1939 में सर्वप्रथम इस पर नियमित कार्यक्रम बीबीसी द्वारा प्रसारित किए गए। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका और ब्रिटेन में सादा टेलीविजन उन्नत रूप में घर-घर प्रचलित हो गया। भारत में दूरदर्शन की स्थापना प्रायोगिक तौर पर 15 सितंबर, 1959 को दिल्ली में हुई। तब इसका नाम 'टेलीविजन इंडिया' था, प्रसारण सप्ताह में तीन दिन आधा-आधा घंटा, बाद में एक-एक घंटा के लिए होता था। 1965 से रोजाना प्रसारण प्रारंभ हुआ। पाँच मिनट का समाचार प्रसारण भी उसी समय से आरंभ हुआ। 1975 में इसे 'दूरदर्शन' नाम दिया गया। यूनेस्को द्वारा भारत में दूरदर्शन शुरू करने के निमित्त बीस हजार डॉलर का सहयोग और अनेक टीवी सेट प्रदान किए गए थे। 1982 में रंगीन टेलीविजन अस्तित्व में आया। 1986 से रामायण और उसके कुछ समय बाद महाभारत का प्रसारण हुआ। इन्हें जबर्दस्त लोकप्रियता मिली। शहरों से लेकर गाँवों तक में टेलीविजन की माँग बढ़ी और बड़े स्तर पर इसकी खरीद हुई। वर्तमान में दूरदर्शन के करीब दो दर्जन सरकारी चैनल चल रहे हैं। 3 नवंबर, 2003 से 24 घंटे प्रसारण शुरू हुआ। 21वीं सदी के पहले दशक में डिजीटल टेलीविजन ने लोकप्रियता अर्जित कर ली। आकाशवाणी की लोकप्रियता कुछ हद तक दूरदर्शन के आने के साथ उसमें पर्यवसित होती गई, क्योंकि इसमें आवाज के साथ चलती-फिरती तस्वीरों का सीधा प्रसारण भी संभव हुआ।

पुरातन वांग्मय में ऐसे किसी यंत्र के प्रयोग का उल्लेख तो नहीं मिलता, पर ऐसे लोगों का इतिवृत्त अवश्य मिलता है, जो दूर से दृश्य का न केवल ठीक-ठीक अवलोकन कर लेते थे, वरन् आँखों देखी जैसी चित्रावली भी प्रस्तुत कर देते थे। यही नहीं, वहाँ की घटनाओं को प्रभावित करने की क्षमता रखते थे। महाभारत में संजय इसी दृष्टि की बदौलत हस्तिनापुर में बैठे-बैठे कुरुक्षेत्र के मैदान की एक-एक घटना को देखते थे और धृतराष्ट्र को यथातथ्य, सही-सही सुनाते थे, हालाँकि वे घटनाओं को प्रभावित नहीं करते थे। तब मानसिक क्षमता का विकास करके दिव्य शक्ति विकसित की जाती थी। तप, साधना, मनोयोग, ध्यान द्वारा चेतन-अवचेतन, मन-मस्तिष्क और हृदय को सशक्त किया जाता था। अब भी ऐसी घटनाएँ सुनने को मिल जाती हैं, कुछ साधक इन्हें आजमाते हैं। लेकिन अब यह पूर्णरूपेण आध्यात्मिक, धार्मिक क्षेत्र के विषय हैं। आँखों से दूर जो ओझल-अदृश्य है, उसके बारे में सटीक जानकारी प्राप्त कर लेना दूरदर्शनी विद्या-कला है। वैसे भी 'दूरदर्शन' शब्द में यांत्रिकता की बजाय दार्शनिकता एवं प्राणवत्ता की अधिकता है। यह सही है कि दूरयंत्र से प्रसारित घटनाक्रमों में यथातथ्यता होने पर भी बाह्यता और सपाटता अधिक झलकती है, जबकि साधना से प्राप्त शक्ति जीवंतता और आत्मिक लय के आधार पर काम करती थी। अंतर्सूत्रता व दर्शनीयता के इसी अवलंब से अनुप्रेरित होकर सुव्यवस्थित ढाँचे के यांत्रिक रूप को समुन्नत किया जा सका है। यह सर्वसुलभ है; दर्शक के ज्ञान, तप, साधना के स्तर का मुहताज नहीं रहता। गतिशील चित्रों में विज्ञापन, मनोरंजन, समाचार, खेल आदि के प्रसारण से हर कोई लाभ उठा सकता है। प्राणिमात्र का नैसर्गिक स्वभाव है कि जो अदृश्य रहकर अस्तित्व में है और किसी-न-किसी रूप में मन से सन्नद्ध है, उसे देखने, जानने, समझने की सहजवृत्ति पनपती है। दूरदर्शन उसी दूरस्थ दृश्यमान को दिखाने-समझाने का हेतु है, हालाँकि मन में जो खिंचाव है, केवल उसे ही नहीं दिखाता; बल्कि उन पक्षों के प्रति भी रुचि जागृत करता है, जो पहले से जेहन में किंचित भी नहीं होते।

टेलीविजन किसी राष्ट्र का स्वरूप और संपूर्ण विश्व मानस का दर्पण है। आमजनों की सामान्य दिनचर्या में इसकी गहरी पैठ है। समाचारों, विज्ञापनों, धारावाहिकों, कार्यक्रमों के माध्यम से नव्यतम जानकारी प्रदान करने के अतिरिक्त पुरातन, ऐतिहासिक घटनाओं को मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत करने में इसका सानी नहीं। बहुत-सारी पुस्तकों, ग्रंथों के पारायण से अधिक कुछ गतिमान, बोलती तस्वीरें प्रभावी होती हैं। कुछएक चित्र हजारों शब्दों पर भारी पड़ते हैं। जीवंत चित्रों की कथावली के रूप में यह अधिक समय तक स्मृत भी रहता है। विश्व के किसी भी कोने में घटित घटनाओं, उत्सव आयोजनों, मनोरंजक उपादानों और अनुसंधान-आविष्कारों से तत्क्षण न केवल अवगत कराने, बल्कि उनसे लाभान्वित होने का मार्ग प्रशस्त करता है। इस प्रकार आधुनिक वैश्विक संस्कृति के निर्माण में दूरदर्शन का अहम योग है। इसके माध्यम से गरीब-अमीर, निम्न-उच्च सभी वर्गों को अद्यतन जानकारियाँ बिना किसी भेदभाव के शीघ्र सुलभ हैं। भिन्न-भिन्न संस्कृतियों को परस्पर समीप लाने और निचले स्तर के लोक को भूमंडलीकृत करने में इसकी महत्ता जगजाहिर है। युवा पीढ़ी एवं बालमन पर उठने, बैठने, चलने से लेकर पूरी जीवन पद्धति में टीवी के तौर-तरीकों (मैनरिज्म) की कशमकश स्पष्ट दृष्टिगत होती है; लोगों की आदत, अदा, स्वभाव और रुचि में तीव्रतर परिवर्तन हुआ है। वैज्ञानिक चेतना के प्रसार तथा सामाजिक परिवर्तन में इसकी अग्रणी भूमिका से सब भलीभाँति परिचित हैं। सामयिक समस्याओं, चुनौतियों के आलोक में जनकल्याणकारी कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता फैलाने का प्रबल माध्यम है ही। कला-संस्कृति का प्रचारक-प्रसारक है; चलचित्रों, नाटकों का विस्तारक है। पहले फिल्में सिनेमाघरों पर पूरी तरह आश्रित थीं, दर्शकों को समय व पैसे खर्च करके वहाँ जाने के लिए बाध्य करती थीं, अब वे दूरदर्शन के माध्यम से घर-घर पहुँच गई हैं। इस प्रकार हर समय हर जगह उपलब्ध है टीवी और उस पर प्रसारित होने वाला कार्यक्रम।

दूरदर्शन की स्वायत्तता को लेकर मंथन चलते रहा है और सत्ता एवं पूंजी के चंगुल से विलग रखने की सतत आवश्यकता व्यक्त की गई है, यद्यपि ज्वलंत प्रश्न है कि इनके बिना चल कैसे सकता है? इस दुधारी तलवार से बचने के लिए एक स्वानुशासित माध्यम के तौर पर इसकी प्रतिष्ठा होनी चाहिए, जो गुणवत्तापूर्ण कार्यक्रमों का प्रसारण करते हुए निष्पक्ष, पारदर्शी, संतुलित, प्रगतिशील दृष्टि से आत्मनियमन कर सके। आजकल हर स्तर पर व्यावसायिक नजरिए का बोलबाला है, उथले विचारों के साथ उल्टी गंगा बहाने का कुप्रयास चल रहा है। पेशेवर रूप में फलने-फूलने में बुराई नहीं, पर पत्रकारिता उससे आगे एक मिशन भी है। जनचेतना के वाहक दूरदर्शन के मिशनरी दायरे के विकास और विस्तार की जरूरत है। चौथे स्तंभ पत्रकारिता के सबसे सबल माध्यम दूरदर्शन पर लोकतंत्र को टिकाए रखने का गुरुत्व दायित्व है, फलतः उसकी जिम्मेवारी अपने आप बढ़ जाती है।

महिला महाविद्यालय में अध्यापन के पाँच साल

क्यों किसी काम को अच्छा या बुरा कहा जाता है? अमूमन अच्छा या बुरा का कारण कार्य की प्रकृति नहीं, अपितु उससे प्राप्त फल, परिणाम और प्रभाव होता है। यद्यपि यह नैतिक नहीं है, तथापि जिस कर्म का फल अच्छा मिलता है, वह कार्य अच्छा और जिसका फल बुरा लगता है, वह बुरा कर्म माना जाता है। हालाँकि जो अच्छा लगता है, जरूरी नहीं कि बहुत दूर तक अच्छा ही रहे। सामान्यतः अच्छाई-बुराई का निर्णय सामाजिक रूढ़ियों, तात्कालिक लाभालाभ को ध्यान